विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने काफिले को आधा कर पेश की आमजन के सामने मिसाल

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के देशवासियों के नाम आव्हान के साथ ही राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपने काफिले में कमी कर स्पष्ट संदेश दे दिया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आव्हान की अपनी अहमियत है और इसको धरातल पर उतारने का संदेश सत्ता के शीर्ष से ही दिया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने स्वयं पर लागू करने के साथ ही अपने मंत्रीमण्डल के सहभागियों और ब्यूरोक्रेसी को भी स्पष्ट संदेश दे दिया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आव्हान की गंभीरता से पालना की जानी है। मुख्यमंत्री ने अपने स्तर से पालना सुनिष्चित करके यह संदेश दे दिया कि प्रधानमंत्री का यह आव्हान पर उपदेश कुशल बहुतेरे ना होकर स्वयं से ही क्रियान्वयन से जुड़ा हुआ है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल का ही परिणाम है कि ब्यूरोक्रेसी के प्रमुख मुख्यसचिव वी. श्रीनिवास ने भी स्वयं आव्हान के अनुसार कदम उठाने के साथ ही नीचले स्तर तक सरकार की मंशा और भावना को पहुंचा दिया है। इसके लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश भी जारी कर दिये हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने तो काफिले में कारकेड की संख्या आधी कर दी है जिसका असर तत्काल प्रभाव से दिखाई देने लगा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा स्वयं की पहल पर प्रस्तुत की गई मिसाल का असर दूर-दूर तक जाएगा, इसमें किसी तरह का संदेह नहीं हो सकता।

वैश्विक संकट के चलते देश-दुनिया की इकोनोमी पर पड़ने वाला संभावित असर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को साफ दिखाई दे रहा है। यही कारण है कि देशवासियों से दूरदृष्टिपूर्ण अपील करने के साथ ही वाहनों के अपने काफिले में भी कमी कर दी है। अमेरिका-इजरायल और ईरान युद्ध समाप्ति के आसार अभी दिखाई नहीं दे रहे हैं तो दूसरी और दोनों ही देशों की हठधर्मिता के कारण हार्मुज जलडमरुमध्य से परिवहन बाधित होने का परिणाम सामने हैं। अब यह भी साफ हो गया है कि अमेरिका-ईरान युद्ध केवल दो या तीन देशों के बीच युद्ध तक सीमित ना होकर इसके असर से आज कोई देश दूर दूर तक अछूता नहीं दिखाई दे रहा है। यह दो देशों की अहम् की लड़ाई ना होकर समूची मानवता को प्रभावित करने वाले हालात है। आर्थिक उदारीकरण के बाद से ही दुनिया के देशों की एक दूसरे पर निर्भरता अधिक हो गई है। विकास के साथ साथ दुनिया के देशों की एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ी है। बिना किसी अन्य देश के सहयोग के कोई भी देश अपने स्तर पर अपने देशवासियों की जरुरतों को पूरा करने की स्थिति में नहीं है। आर्थिक उदारीकरण के बाद से आज विश्व विश्व ग्राम में परिवर्तित हो गया है। एक बात यह भी साफ हो जानी चाहिए कि आज अमेरिका-इजरायल और ईरान संकट का हल निकल भी आता है तब भी वैश्विक हालात सामान्य होने में लंबा समय लग जाएगा। युद्धरत देश यह समझने की कोशिश नहीं कर रहे कि उनके अहम् के चलते दुनिया आज सालों पीछे जा रही है। विकास बाधित हो रहा है, आर्थिक गतिविधियां प्रभावित हो रही है और हालात दिन प्रतिदिन बिगड़ते ही जा रहे हैं।

यह साफ हो जाना चाहिए कि हालातों को देखते हुए और आसन्न संकट से निपटने की पूर्व तैयारियों के हमेशा दीर्घकालीन सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। एक बात और साफ हो जानी चाहिए कि प्रधानमंत्री के आव्हान का एक भी ऐसा बिन्दु नहीं है जो कहीं बाधक बन रहा हो। इनकी पालना से हमारे दैनिक जीवन में सकारात्मक प्रभाव ही पड़ेगा। विदेशी पूंजी बचेगी, आयात कम होगा, फिजूलखर्ची रुकेगी और विदेशी देशों को भी सबक मिलेगा।

प्रधानमंत्री के आव्हान के साथ ही राजस्थान की सरकार ने आवश्यक फैसलें भी कर लिए है। राज्य सरकार के फैसले के अनुसार मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपने काफिले को आधा करने के साथ ही सुरक्षा के नाम पर अनावश्यक वाहनों का उपयोग नहीं करने का निर्णय कर लिया है। इसी तरह से मंत्रीमण्डल सहयोगियों और अधिकारियों को भी वाहनों के उपयोग में मितव्ययता बरतने के निर्देश दे दिए हैं। इससे वाहनों में उपयोग होने वाले ईंधन की बचत हो सकेगी। इसके साथ ही समय और धन की बचत के लिए हाईब्रिड मोड पर मीटिंग्स आयोजित करने का निर्णय किया गया है। जिलों में अधिकारियों को वाहन पूल करके उपयोग में लेने के निर्देश दिए गए हैं। सरकार के स्तर पर मितव्ययता के निर्देश जारी होने का संदेश नीचले स्तर तक जाता है। इसका असर आने वाले समय में साफ-साफ दिखाई देने लगेगा। सरकारी स्तर पर जब प्रधानमंत्री के आव्हान का क्रियान्वयन उच्च स्तर से होने लगा है तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आमजन से किए गए आव्हान पर भी सकारात्मक संदेश जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के वाहनों के काफिले में भी दो वाहन ही दिखाई देना गंभीरता को दर्शाता है। अब आम जनता से जुड़े संदेश का क्रियान्वयन भी इसी भावना के साथ आमजन द्वारा किया जाना चाहिए। सोना नहीं खरीदने, सार्वजनिक वाहनों का उपयोग, वाहन पूलिंग, ईवी का उपयोग, विदेशी यात्राएं टालना और शानों शोकत और दिखावे के लिए विदेशों में शादियां नहीं करने के आव्हान पर गंभीरता से क्रियान्वयन करना होगा। यह साफ हो जाना चाहिए कि हालातों को देखते हुए और आसन्न संकट से निपटने की पूर्व तैयारियों के हमेशा दीर्घकालीन सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। एक बात और साफ हो जानी चाहिए कि प्रधानमंत्री के आव्हान का एक भी ऐसा बिन्दु नहीं है जो कहीं बाधक बन रहा हो। इनकी पालना से हमारे दैनिक जीवन में सकारात्मक प्रभाव ही पडेगा। विदेशी पूंजी बचेगी, आयात कम होगा, फिजूलखर्ची रुकेगी और विदेशी देशों को भी सबक मिलेगा।

अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने देश के सामने मिसाल पेश कर दी है। सरकार ने भी अपने स्तर पर जो निर्णय किये जाने हैं वह कर दिए हैं तो ऐसे में आमजन को भी आगे आकर प्रधानमंत्री के आव्हान के क्रियान्वयन के लिए आगे आना होगा। निश्चित रुप से भजनलाल शर्मा की पहल सराहनीय है तो इससे प्रेरणा लेकर प्रत्येक प्रदेशवासी को आगे आना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल शुक्रवार 15 मई, 2026

पंडित अनिल शर्मा

प्रथम ज्येष्ठ मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, अश्विनी नक्षत्र रात्रि 8:15 तक, आयुष्मान योग दिन 2:21 तक, वणिज करण प्रात: 8:32 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 8:15 तक है। भद्रा प्रात: 8:32 से सायं 6:52 तक रहेगी। आज ज्येष्ठ संक्रांति, सूर्य वृष में प्रवेश प्रात: 6:22 पर करेगा। पुण्य काल दिन 12:46 तक है। आज मास शिवरात्रि, सावित्री चतुरदशी है। आज चतुरदशी तिथि का क्षय हुआ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:23 तक, लाभ-अमृत 7:23 से 10:43 तक, शुभ 12:23 से 2:03 तक, चर 5:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:43, सूर्यास्त 7:03

मेष

मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

धनु

आज आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर

घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

तुला

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों में प्रगति होगी। आज परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

वृश्चिक

स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

निजी आस्था में आजादी, सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता, यही भारतीयता का नारा हो

मदन सिंह काला

15 अगस्त 1947 को हमने राजतंत्र को अलविदा कहा। 26 जनवरी 1950 को संविधान ने हमें जनता का शासन दिया। संविधान सभा ने दूरदर्शिता दिखाते हुए अनुच्छेद 15 और 27 के माध्यम से साफ कर दिया कि राज्य धर्म-जाति-वंश के आधार पर भेद नहीं करेगा और टैक्स का पैसा किसी धर्म विशेष के प्रचार पर नहीं लगेगा। इसे ही पंथ-निरपेक्षता कहते हैं। एक लोकसेवक के रूप में 36 साल से अधिक समय से सिस्टम के अंदर रहकर मैंने देखा है कि समस्या नीयत में नहीं, पारदर्शिता में है।

1. टैक्स का हिसाब : सरकार का खाता जनता से कब लिंक होगा?

आज गरीब सुबह चाय की दुकान पर जाता है तो चाय, दूध, चीनी - सब पर जीएसटी देता है। केंद्र सरकार को 2025-26 में करीब 42 लाख करोड़ टैक्स से मिले। पर RTI से 6 महीने बाद पता चलता है कि प्रधानमंत्री के विदेश दौरे पर कितना खर्च हुआ। जब स्वीडन का प्रधानमंत्री मेट्रो से जाता है और रोज का खर्च वेबसाइट पर डालता है, तो भारत में क्यों नहीं?

माँग: हर अखबार में रोज सरकारी बही-खाता छपे - "कल कुल टैक्स 7,100 करोड़ आया, राष्ट्रपति-PM-CM पर 4.2 करोड़ खर्च, विकास पर 5,000 करोड़"। टैक्स चोरी रोकने को हम सबका बैंक खाता, आधार, पैन लिंक कर सकते हैं, तो सरकारी खाता जनता से क्यों नहीं?

2. 70 प्रतिशत भारत अखबार के 8वें पन्ने पर क्यों? गाँव तभी खबर बनता है जब किसान आत्महत्या कर ले या बेटी से दरिंदगी हो। बीकानेर मंडी में आज मूँग 8200 रु. क्विंटल है। कल 12 मजदूरों को ठेकेदार ने मजदूरी नहीं दी - ये खबर नहीं बनती। श्ए३ मिला या नहीं, नहर में पानी आया या नहीं, नरेगा का पैसा अटका क्यों है- ये मुख्यधारा कब बनेगा?

माँग: हर समाचार पत्र को पहला पन्ना श्रम-किसान डायरी के लिए अनिवार्य किया जाए। मंडी भाव, मौसम, फसल बीमा, पशु-टीका - ये मुख्य खबर हो, नेता का उद्घाटन नहीं।

3. धर्म निजी, सड़क सरकारी हो।

काँवड़ यात्रा, मेले, जागरण पर करोड़ों का सरकार खर्च कर रही है। आए दिन समाचार पत्रों में धार्मिक आयोजनों के बड़े-बड़े विज्ञापन अखबारों सरकारें छपवा रही हैं जिनमें प्रधानमंत्री व अन्य नेताओं की आकर्षक रंगीन फोटो होती हैं। वीआईपी दर्शन के लिए पुलिस, बैरिकेड, हेलिकॉप्टर। आम श्रद्धालु भगदड़ में मरता है। संविधान का अनुच्छेद 27 स्पष्ट है। सरकार का काम बिजली, पानी, सड़क देना है, मोक्ष नहीं। फ्रांस ने 1905 में Church-State अलग किया, तभी विकास हुआ। धार्मिक आयोजन आयोजक खुद करें, चंदे से करें।

4. कल्चर लोकतंत्र का दीमक है

प्रधानमंत्री से लेकर चपरासी तक - सबका खर्च सार्वजनिक होना चाहिए। जब खर्च गुप्त होता है, तो जनतंत्र धीरे-धीरे नया राजतंत्र बन जाता है। पारदर्शिता से ही VIP कल्चर मरेगा।

निष्कर्ष: "निजी आस्था में आजादी, सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता"

यही भारतीयता का नया नारा होना चाहिए। जब तक हर बच्चे को स्कूल, हर गाँव को सड़क, हर खेत को पानी नहीं मिलता, तब तक एक भी रुपया धर्म-प्रचार या वीआईपी ठाठ-बाट पर खर्च न हो।

जिस दिन मंत्री की थाली का बिल और किसान की मंडी की पर्ची एक ही पन्ने पर छपेगी, उस दिन 1950 का वादा पूरा होगा। वरना 15 अगस्त आजादी है, 26 जनवरी सिर्फ छुट्टी है।

टैक्स हमारा, राज हमारा, हिसाब भी हमारा।

-मदन सिंह काला, सेवानिवृत्त आई.ए.एस.

प्लास्टिक की बोतलों में पानी पीने के खतरे – सरकारें नीतियां बनायें

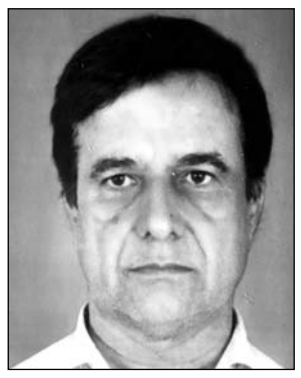

डॉ. दिनेश द्विवेदी

हाल ही में कोलंबिया यूनिवर्सिटी की एक स्टडी में पाया गया कि एक लीटर बोतलबंद पानी में औसतन 2.4 लाख नैनोप्लास्टिक के कण हो सकते हैं।

आपके दोनों सवालों का विस्तृत विश्लेषण यहाँ दिया गया है:

1. मानव शरीर में नैनोप्लास्टिक और बीमारियों के प्रमाण

वैज्ञानिकों को अब शरीर के अलग-अलग हिस्सों में प्लास्टिक के कण मिलने लगे हैं, लेकिन बीमारियों के साथ उनके सीधे संबंध पर शोध अभी जारी है। अब तक के प्रमाण इस प्रकार हैं:-रक्त और अंगों में मौजूदगी: रिसर्च में इंसानी खून, फेफड़ों के ऊतकों और यहाँ तक कि गर्भनाल में भी माइक्रो और नैनोप्लास्टिक के कण पाए गए हैं।

कोशिका स्तर पर नुकसान: लैब टेस्ट बताते हैं कि नैनोप्लास्टिक कोशिकाओं में प्रवेश करके उन्हें क्षति पहुँचा सकते हैं और ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस पैदा कर सकते हैं, जिससे शरीर में सूजन बढ़ सकती है।

हृदय रोग का खतरा: मार्च 2024 में The New England Journal of Medicine में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, जिन लोगों की धमनियों में माइक्रोप्लास्टिक पाया गया, उनमें हार्ट अटैक, स्ट्रोक या मृत्यु का जोखिम उन लोगों की तुलना में 4 गुना अधिक था, जिनके रक्त में ये कण नहीं थे।

हार्मोनल असंतुलन: प्लास्टिक में एंडोक्राइन डिसरप्टर्स (जैसे BPA और Phthalates) होते हैं, जो शरीर के हार्मोन सिस्टम को बिगाड़ सकते हैं, जिससे प्रजनन क्षमता और मेटाबॉलिज्म पर असर पड़ता है।

2. सरकारें इन्हें तत्काल बंद क्यों नहीं कर रही हैं?

यह एक जटिल नीतिगत मामला है। सरकारों के सामने कुछ बड़ी चुनौतियाँ और तर्क हैं:-

पुख्ता वैज्ञानिक डेटा की कमी: हालांकि प्रमाण मिल रहे हैं, लेकिन स्वास्थ्य नियामक (जैसे WHO और FDA) अक्सर लॉन्ग टर्म क्लिनिकल डेटा की मांग करते हैं जो यह साबित कर सके कि प्लास्टिक की एक निश्चित मात्रा ही बीमारी का कारण है। वर्तमान में इसे 'संभावित खतरा' माना जा रहा है, 'निश्चित' नहीं।

सुरक्षित पेयजल का विकल्प: कई विकासशील क्षेत्रों में बोतलबंद पानी ही सुरक्षित और साफ पानी का एकमात्र स्त्रोत है। यदि इसे अचानक बंद कर दिया जाए, तो हैजा और टाइफाइड जैसी जलजनित बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है।

आर्थिक और लॉजिस्टिक प्रभाव: प्लास्टिक उद्योग और पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर एक विशाल वैश्विक अर्थव्यवस्था है। इसे बंद करने के लिए कांच या एल्युमीनियम जैसे विकल्पों को बड़े पैमाने पर सस्ता और सुलभ बनाना होगा, जिसमें समय और भारी निवेश लगेगा।

प्रतिबंध बनाम प्रबंधन: फिलहाल सरकारों का ध्यान सिंगल यूज प्लास्टिक (जैसे स्ट्रॉ या पतली थैलियों) पर प्रतिबंध लगाने और रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देने पर है, बजाय इसके कि पूरे बोतलबंद पानी उद्योग को बंद किया जाए।

निष्कर्ष-- प्रमाण स्पष्ट रूप से एक बड़े खतरे की ओर इशारा कर रहे हैं। वैज्ञानिक समुदाय अब 'सावधानी के सिद्धांत' (Precautionary Principle) की वकालत कर रहा है-यानी भले ही पूरी तरह साबित न हुआ हो, लेकिन खतरे को देखते हुए बचाव शुरू कर देना चाहिए।

व्यक्तिगत स्तर पर, स्टेनलेस स्टील या कांच की बोतलों का उपयोग करना और प्लास्टिक की बोतलों को धूप या गर्मी से बचाना सबसे सुरक्षित कदम है।

–डॉ. दिनेश द्विवेदी,
सेवानिवृत कार्यकारी निदेशक आरएमएससीएल एवं अतिरिक्त अधीक्षक एसएमएस अस्पताल जयपुर।

'स्वच्छ सहकार, समृद्ध सहकार' अभियान : कार्य संस्कृति में सकारात्मक बदलाव की अभिनव पहल

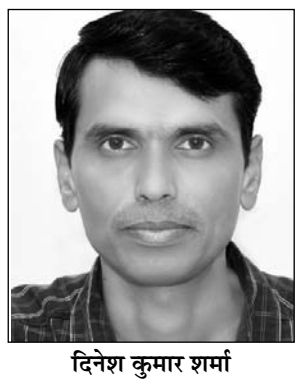

दिनेश कुमार शर्मा

राजकीय कार्यालय केवल प्रशासनिक कार्यों के संचालन का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे शासन की कार्यसंस्कृति, पारदर्शिता और जनसेवा के दृष्टिकोण का प्रतिबिंब भी होते हैं। जब कार्यालय स्वच्छ, सुव्यवस्थित और तकनीकी रूप से सक्षम होते हैं, तब न केवल कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ती है, बल्कि आमजन को भी बेहतर और त्वरित सेवाएं प्राप्त होती हैं। इसी सोच को साकार करने की दिशा में सहकारिता मंत्री श्री गौतम कुमार दक की मंशा के अनुरूप तथा शासन सचिव एवं रजिस्ट्रार डॉ. समित शर्मा के निर्देशन में सहकारिता विभाग द्वारा 'स्वच्छ सहकार, समृद्ध सहकार' अभियान का संचालन किया जा रहा है। यह अभियान विभागीय कार्य संस्कृति में सकारात्मक परिवर्तन लाने की एक महत्वपूर्ण पहल बनकर उभर रहा है।

4 मई से 29 मई 2026 तक चलने वाला यह विशेष अभियान सहकारिता विभाग के प्रधान कार्यालय सहित अधीनस्थ कार्यालयों में चरणबद्ध रूप से संचालित किया जा रहा है। अभियान का उद्देश्य केवल साफ-सफाई तक सीमित नहीं है, बल्कि कार्यालयों में सुव्यवस्थित रिकॉर्ड प्रबंधन, अनुपयोगी सामग्री के निस्तारण, डिजिटल कार्यप्रणाली को बढ़ावा देने और बेहतर प्रशासनिक वातावरण तैयार करने पर भी विशेष जोर दिया गया है। अभियान के माध्यम से संदेश दिया जा रहा है कि स्वच्छ एवं व्यवस्थित कार्यालय ही प्रभावी प्रशासन की आधारशिला हैं। अव्यवस्थित रिकॉर्ड, अनुपयोगी सामग्री और अस्वच्छ वातावरण न केवल राजकार्य में बाधा उत्पन्न करते हैं, बल्कि विभाग की छवि को भी प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, साफ-सुथरे और व्यवस्थित कार्यालय सकारात्मक कार्य वातावरण का निर्माण करते हैं, जिससे कार्यों के निष्पादन में गति और पारदर्शिता आती है।

अभियान के अंतर्गत विशेष रूप से रिकॉर्ड प्रबंधन को दुरुस्त करने, पुराने दस्तावेजों का नियमानुसार वर्गीकरण एवं निस्तारण करने तथा फाइलों को स्कैन कर ई-फाइल प्रणाली अपनाने पर जोर दिया जा रहा है। अनुपयोगी कबाड़, पुराने वाहनों और खराब फर्नीचर के शीघ्र निस्तारण के साथ-साथ कार्यालयों की दीवारों के रंग-रोगन, शौचालयों की नियमित सफाई और स्टोर व्यवस्था को बेहतर बनाने पर भी फोकस किया जा रहा है।

इस अभियान की सबसे विशेष बात यह है कि इसमें जापान की प्रसिद्ध `5 Sme' कार्यप्रणाली को अपनाया गया है। 'Seiri' अर्थात छंटाई के माध्यम से अनुपयोगी सामग्री को अलग किया जाएगा, 'Seiton' के तहत आवश्यक फाइलों और उपकरणों को सुव्यवस्थित रखा जाएगा, 'Seiso' में नियमित साफ-सफाई सुनिश्चित की जाएगी, 'Seiketsu' के माध्यम से एक समान कार्य मानक विकसित किए जाएंगे तथा 'Shitsuke' के जरिए कर्मचारियों में अनुशासित और व्यवस्थित कार्य संस्कृति विकसित की जाएगी। यह प्रणाली केवल कार्यालयों की भौतिक स्वच्छता तक सीमित नहीं है, बल्कि सोच और कार्यशैली में सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम भी है।

अभियान को तीन चरणों में संचालित किया जा रहा है। पहले चरण में अनुपयोगी रिकॉर्ड एवं सामग्री की पहचान, दूसरे चरण में व्यापक साफ-सफाई और व्यवस्था सुधार तथा तीसरे चरण में चिह्नित सामग्री का नियमानुसार निस्तारण किया जाएगा। सभी कार्यालयाध्यक्षों को नियमित मॉनिटरिंग एवं साप्ताहिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं। अभियान की प्रगति को पारदर्शी और प्रभावी बनाने के लिए सभी कार्यालयों को बिफोर एवं आफ्टर फोटो साझा करने के भी निर्देश दिए गए हैं।

'स्वच्छ सहकार, समृद्ध सहकार' अभियान वास्तव में सहकारिता विभाग में आधुनिक, उत्तरदायी और जनोन्मुखी प्रशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पहल न केवल कार्यालयों को अधिक सुव्यवस्थित बनाएगी, बल्कि कर्मचारियों में जिम्मेदारी और सकारात्मक कार्य दृष्टिकोण विकसित कर आमजन को अधिक प्रभावी सेवाएं उपलब्ध कराने में भी सहायक सिद्ध होगी। यह अभियान केवल कार्यालयों की सफाई अथवा पुराने रिकॉर्ड के निस्तारण तक सीमित पहल नहीं है, बल्कि यह सहकारिता विभाग में नई कार्य संस्कृति, जिम्मेदारी, पारदर्शिता और सकारात्मक सोच विकसित करने का व्यापक प्रयास है। 'स्वच्छ सहकार, समृद्ध सहकार' का मूल भाव यह है कि जब कार्यस्थल स्वच्छ, सुव्यवस्थित और तकनीकी रूप से सक्षम होंगे, तब कर्मचारियों में कार्य के प्रति उत्साह और उत्तरदायित्व की भावना भी स्वत: विकसित होगी।

–दिनेश कुमार शर्मा,
सहायक जनसम्पर्क अधिकारी,
सहकारिता विभाग

स्कूल व आबादी क्षेत्र के बीच शराब ठेका खोलने का विरोध

पावटा के ग्राम मांजूकोट के लोगों ने शराब ठेका हटाने को लेकर एसडीएम को ज्ञापन सौंपा

पावटा, (निसं)। ग्राम मांजूकोट में शराब की दुकान खोले जाने को लेकर ग्रामीणों में भारी नाराजगी देखने को मिल रही है। ग्रामीणों ने बुधवार को उपखंड अधिकारी पावटा डॉ . साधना शर्मा को ज्ञापन सौंपकर शराब की दुकान को तत्काल हटाने की मांग की।

ग्रामीणों का आरोप है कि दुकान आबकारी नियमों को दरकिनार कर स्कूल और आबादी क्षेत्र के नजदीक संचालित की जा रही है। ग्रामीणों द्वारा दिए गए ज्ञापन में बताया गया कि दुकान कोड 4504032 पहले पंडितपुरा क्षेत्र में स्थित थी, लेकिन अब इसे बदलकर मांजूकोट में स्वीकृत कर दिया गया है। ग्रामीणों का कहना है कि यह परिवर्तन आबकारी नियम 1956 के नियम 75/2 के विपरीत किया गया है। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि शराब की

- **जिला आबकारी अधिकारी ने आबकारी निरीक्षक को निर्देश दिए**

दुकान गांव के बीच आबादी क्षेत्र में तथा स्कूल से करीब 200 मीटर के दायरे में संचालित हो रही है, जिससे बच्चों और ग्रामीणों पर गलत प्रभाव पड़ने की आशंका बनी हुई है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि दो वर्ष पूर्व भी इसी स्थान पर शराब की दुकान खोली गई थी, जिसे नियमों के उल्लंघन के कारण निरस्त कर दिया गया था, लेकिन अब पुन: आबकारी अधिकारियों और ठेकेदारों की मिलीभगत से दुकान स्थापित कर दी गई है। ग्रामीणों ने उपखंड अधिकारी से मामले की निष्पक्ष जांच करवाने, दुकान को पूर्व लोकेशन पर स्थानांतरित करने तथा आबकारी नियमों की पालना सुनिश्चित करने की मांग की है। ज्ञापन पर पंडितपुरा व मांजूकोट के कई ग्रामीणों के हस्ताक्षर मौजूद रहे। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो गांव स्तर पर बड़ा आंदोलन किया जाएगा। वहीं ग्रामीणों द्वारा उठाए गए विरोध के बाद अब आबकारी विभाग हरकत में आ गया है। जिला आबकारी अधिकारी बहरोड़ ने मामले को गंभीरता से लेते हुए आबकारी निरीक्षक, वृत्त कोटपुतली को जांच के निर्देश जारी किए हैं। कार्यालय से जारी आदेश में आबकारी निरीक्षक को निर्देशित किया गया है कि मामले की नियमानुसार जांच कर आवश्यक कार्रवाई करते हुए जांच रिपोर्ट शीघ्र जिला कार्यालय को भेजी जाए।

कर्मचारी एवं आमजन मंडल रेल प्रबंधक से करेंगे संवाद

कोटा, (निसं)। पश्चिम-मध्य रेलवे के कोटा मंडल में कर्मचारियों एवं आम नागरिकों की शिकायतों के त्वरित एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण पहल की शुरुआत की गई है। मंडल रेल प्रबंधक अनिल कालरा के निर्देशानुसार अब प्रत्येक गुरुवार को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में शिकायतकर्ताओं से सीधे संवाद कर उनकी समस्याओं का निराकरण किया जाएगा।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन ने बताया कि इस व्यवस्था के अंतर्गत कोटा मंडल के कर्मचारी एवं सामान्य शिकायतकर्ता प्रत्येक गुरुवार सायं 5 बजे से 6 बजे तक पूर्व निर्धारित पंजीकरण के आधार पर मंडल रेल प्रबंधक से मिल सकेंगे। यदि किसी कारणवश गुरुवार को यह बैठक संभव न हो सके, तो उसी सप्ताह शुक्रवार को निर्धारित समय पर शिकायतकर्ताओं को अवसर प्रदान किया जाएगा। शिकायत निवारण प्रक्रिया को सुव्यवस्थित एवं प्रभावी बनाने के लिए यह अपेक्षित होगा कि शिकायतकर्ता पहले

- **कोटा मंडल के कर्मचारी एवं शिकायतकर्ता प्रत्येक गुरुवार सायं 5 बजे से 6 बजे तक पंजीकरण के आधार पर मंडल रेल प्रबंधक से मिल सकेंगे**

संबंधित शाखा अधिकारी अथवा अपर मंडल रेल प्रबंधक स्तर पर अपनी समस्या प्रस्तुत कर चुके हों। तत्पश्चात निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार आवेदन प्रस्तुत कर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में समय प्राप्त किया जा सकेगा। मंडल प्रशासन द्वारा यह भी सुनिश्चित किया गया है कि शिकायतों पर संबंधित विभागों द्वारा समयबद्ध कार्रवाई की जाए एवं शिकायतकर्ताओं को उनकी समस्याओं के समाधान की प्रगति से निरंतर अवगत कराया जाए। इसके लिए वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी स्तर पर नियमित मॉनिटरिंग की व्यवस्था की गई है।